University in News on 24 May 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

पत्रकारिता के नैतिक मूल्यों का क्षरण रोकना जिम्मेदारी

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ विश्वविद्यालय के एपी सेन सभागार में देवर्षि नारद की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोलते मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय। - संवाद

लखनऊ। देवर्षि नारद जयंती की पूर्व संध्या पर बृहस्पतिवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के एपीसेन सभागार में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका विषय था नारद की वेद सम्मत नीतियां और वर्तमान की भारतीय पत्रकारिता।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. अशोक दुबे ने कहा कि भारत की संस्कृति का आधार अध्यात्म है। उन्होंने कहा कि देवर्षि नारद पत्रकारिता के श्रुतिपूरक हैं। मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय ने कहा कि नई पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह पत्रकारिता के नैतिक मूल्यों का क्षरण होने से रोकें। नरेंद्र भदौरिया ने कहा कि पत्रकारिता में सहज, सरल और सबका होना नैतिकता का मूल्य है। स्वयं सेवक संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख सुभाष जी, प्रॉक्टर प्रो. राकेश द्विवेदी, डॉ. सौरभ मालवीय, डॉ. शचींद्र शेखर, डॉ. मनीष कुमार आदि मौजूद रहे।

NBT PAGE 7

'नारद लोक कल्याण के देवता'

एलयू में देवर्षि नारद जयंती पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले वक्ता

'देवर्षि नारद जी की वेदसम्मत नीतियां और वर्तमान भारतीय पत्रकारिता' विषय पर चर्चा

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊ

एलयू में गुरुवार को देवर्षि नारद जयंती पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में आरएसएस पूर्वी यूपी क्षेत्र के क्षेत्र प्रचार प्रमुख सुभाष ने कहा कि नारद आचरण, सत्य का आग्रह और सत्य की निष्ठा रखते हैं। वह लोक कल्याण के देवता हैं। 'देवर्षि नारद जी की वेदसम्मत नीतियां और वर्तमान भारतीय पत्रकारिता' विषय पर हुई संगोष्ठी में सुभाष ने कहा कि बाल गंगाधर तिलक ने 6 वर्ष जेल में रहने के बाद बाहर आकर फिर से पत्रकारिता शुरू की। पत्रकारिता में स्पर्धा नहीं समन्वय चाहिए।

संगोष्ठी में वरिष्ठ पत्रकार और लेखक उमेश उपाध्याय ने कहा कि आज की पत्रकारिता नारद के मूल्यों से उलट है।

संगोष्ठी में वक्ता बोले-पत्रकारिता में स्पर्धा नहीं समन्वय चाहिए।

मीडिया में काफी द्वंद्व है। विश्व संवाद केंद्र के अध्यक्ष नरेंद्र भदौरिया ने कहा कि नारद को फिल्मों और नाटकों में विदूषक या लड़ाई कराने वाले के रूप में दिखाया गया है। हमारे सभी ऋषियों और संतों को विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि विश्व की कोई ऐसी भाषा नहीं, जिसने भारत का व्याकरण न चुराया हो। वहीं, अवध प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. अशोक दुबे ने कहा कि ऋषि परंपरा और लोक परंपरा में नारद विशेष परिकल्पना हैं। वह छह शास्त्रों के प्रणेता हैं। भारत में जब पत्रकारिता का जन्म हुआ तब नारद को याद किया गया। वह पत्रकारिता क्षेत्र में सबसे बड़े आदर्श हैं।

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू: पत्रकारिता में स्पर्धा नहीं, समन्वय की जरूरत

एलयू में गुरुवार को देवर्षि नारद जयंती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी

- देवर्षि नारद जयंती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई
- नारद जी की वेदसम्मत नीति पर चर्चा की गई

लखनऊ, संवाददाता। चरित्र में चिंतन आएगा तभी निष्पक्षता आ सकती है। जो चिंतन में है वही चरित्र है। करुणा, परोपकार और अहिंसा ही संदेश है। नारद जी ने दक्ष के श्राप का लोकहित में उपयोग किया। नारद लोक कल्याण के देवता हैं। बाल गंगाधर तिलक छह वर्षों के लिए जेल गए। लेकिन निकलकर आए तो फिर से पत्रकारिता शुरू की। पत्रकारिता में स्पर्धा नहीं समन्वय चाहिए। नारद के हाथ में वीणा समन्वय का प्रतीक है। संगीत ही समन्वय है। मानवता के उत्थान के लिए संतुलन और समन्वय को समझने की जरूरत है। ये बातें आरएसएस पूर्वी यूपी क्षेत्र के क्षेत्र प्रचार प्रमुख सुभाष जी ने कहीं। वह एलयू में देवर्षि नारद जयंती पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता रहे।

एपी सेन सभागार में देवर्षि नारद जी की वेदसम्मत नीतियां और वर्तमान भारतीय पत्रकारिता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता सुभाष जी ने कहा कि भगवान कहते हैं कि मैं स्वयं देवर्षि नारद हूं। उन्होंने बताया कि नारद जी संवाद कला में निपुण हैं। मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार और लेखक उमेश उपाध्याय ने कहा कि आज की पत्रकारिता नारद जी के मूल्यों से उलट दिखाई देती है। मीडिया में काफी द्वंद है।

अवध प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. अशोक दुबे ने कहा कि ऋषि परंपरा और लोक परम्परा में नारद जी विशेष परिकल्पना है। वह भगवान विष्णु के प्रभाभक्त थे। विष्णु के वरदान से किसी भी लोक में जा सकते थे। डॉ. दुबे ने कहा कि भारत में जब पत्रकारिता का जन्म हुआ तब नारद जी को याद किया गया। उदन्त मार्तण्ड में उनकी तस्वीर लगाई जाती थी।

कैंटीनों में सीसी कैमरा और ड्रेनेज सिस्टम लगाया जाएगा

- गर्मी की छुट्टियों में कैंटीन संवारी जाएंगी
- डीएसडब्ल्यू प्रो. संगीता ने तैयार किया प्रस्ताव

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में कैंटीनों के हालात को सुधारा जाएगा। आधुनिक सुविधाओं से लैस भी किया जाएगा। इस संबंध में अधिष्ठाता छात्र कल्याण ने खाका तैयार कर लिया है। जिसे कुलसचिव के पास अनुमोदन के लिए भेजा जाएगा।

एलयू में मुख्य व नवीन परिसर को मिलाकर कुल 12 कैंटीन हैं। स्वच्छता को लेकर एफएसडीए की टीम ने नोटिस भी जारी किया था। जिस पर अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. संगीता साहू ने कैंटीन्स के दुरूस्तीकरण को लेकर सजग हुईं। उन्होंने गर्मी की छुट्टियों में मुख्य व नवीन परिसर की कैंटीन को दुरुस्त कराने का फैसला लिया है। डीएसडब्ल्यू प्रोफेसर संगीता साहू ने प्रपोजल बनाया है। जिसे कुलसचिव डॉ. विनोद को भेजा जाएगा।

i-NEXT PAGE 4

27 से मिड सेमेस्टर एग्जाम

चौथे और छठे सेमेस्टर के मिड सेमेस्टर एग्जाम 27 से 30 मई तक होंगे

विश्वविद्यालय के प्रबंधन विभाग ने एमबीए और बीबीए मिड सेमेस्टर परीक्षाओं की समय सारिणी जारी कर दी है. एमबीए दूसरे व चौथे सेमेस्टर की यह परीक्षाएं 27 से 31 मई तक और बीबीए दूसरे, चौथे व छठे सेमेस्टर की मिड सेमेस्टर परीक्षाएं 27 से 30 मई तक होंगी.

LUCKNOW (23 MAY): डा. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास

'देवर्षि नारद ने लोकमंगल की पत्रकारिता की'

जासं, लखनऊ: देवर्षि नारद जयंती पर लखनऊ विश्वविद्यालय और विश्व संवाद केंद्र की ओर से एपी सेन सभागार में 'देवर्षि नारद की वेदसम्मत नीतियां और वर्तमान भारतीय पत्रकारिता' विषय राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ताओं ने पत्रकारिता के मानकों पर चर्चा की। चर्चा में पत्रकारिता में संतुलन बनाकर लोक कल्याण की भावना को आगे बढ़ाने पर जोर दिया गया। संगोष्ठी विश्व संवाद केंद्र और लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता और जनसंचार विभाग की ओर से थी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अवध प्रांत के प्रांत प्रचार प्रमुख डा. अशोक दुबे ने कहा कि देवर्षि नारद ने हमेशा लोकमंगल की पत्रकारिता की। इस क्षेत्र में वह हमारी संस्कृति में पूजनीय हैं। हजारों वर्षों के इतिहास काल में विभिन्न संघर्षों के साथ अपने विचारों पर अडिग रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्र प्रचार प्रमुख व मुख्य वक्ता सुभाष ने बताया कि पत्रकारिता का मूल तत्व जिज्ञासा है। जिज्ञासा होगी तो जानकारी प्राप्त हो सकती है। जनकल्याण की सूचनाओं को सामने लाना ही आदर्श पत्रकारिता है। पत्रकार सत्याग्रही बनकर अपनी लेखनी

शुभारंभ करते विश्व संवाद केंद्र के अध्यक्ष नरेंद्र भदौरिया, साथ में उमेश उपाध्याय, क्षेत्र प्रचार प्रमुख सुभाष और प्रांत प्रचारक प्रमुख अवध डा. अशोक दुबे ● जागरण

लखनऊ विश्वविद्यालय विश्व संवाद केंद्र द्वारा देवर्षि नारद जयंती समारोह में आयोजित संगोष्ठी में पत्रकारिता पर वक्ताओं ने की चर्चा

से समाज के जागरण का कार्य करते रहे, इससे भारत में सफल लोकतंत्र की स्थापना हुई। उन्होंने कहा कि देवर्षि नारद का शील ही संदेश है। नारद केवल संचारक ही नहीं उद्धारक भी हैं। नारद जी का जीवन लोक कल्याण के लिए है। इसलिए हमें पत्रकारिता की पूर्णता तक जाना चाहिए। मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय ने कहा कि आज की पत्रकारिता में द्वंद है। पहले की पत्रकारिता मिशन थी जबकि आज की पत्रकारिता में लटकी हुई है। पत्रकारिता में समन्वय और संतुलन बनाए रखना है। आज लगभग नकारात्मक खबरें ही लीड खबर बनती हैं।

मीडिया को इससे बाहर आने की आवश्यकता है। विश्व संवाद केंद्र के अध्यक्ष नरेंद्र भदौरिया ने चिंता जताई कि आज की पत्रकारिता ने सोशल मीडिया के सामने घुटने टेक दिए हैं। हमें पाश्चात्य मीडिया के सामने नहीं झुकना है। अशोक सिन्हा ने सभी का आभार जताया। संचालन डा. सौरभ मालवीय ने किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अवध के सह प्रचार प्रमुख डा. शचींद्रनाथ, डा.लोकनाथ, डा. हरनाम सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे।

JAGRAN CITY PAGE III

संदिग्धों की आवाज की पहचान करना सीखेंगे विद्यार्थी

लवि के एंथोपोलाजी विभाग के एम.एससी चौथे सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने विभिन्न तेव में शुरू किया लघु शोध

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के फोरेंसिक साइंस के विद्यार्थी दूध, तेल में मिलावट की जांच करने से लेकर आडियो रिकार्डिंग का विश्लेषण से संदिग्धों की आवाज की पहचान करने सहित कई विधाओं में शोध के लिए पारंगत होंगे। इसके लिए चौथे सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने लखनऊ, दिल्ली सहित विभिन्न प्रतिष्ठित फोरेंसिक प्रयोगशालाओं, अनुसंधान संस्थानों एवं अस्पतालों में लघु शोध शुरू किया है ताकि उन्हें फोरेंसिक विज्ञान के विभिन्न पहलुओं की अच्छी समझ हो सके।

लवि के फोरेंसिक साइंस की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर केया पांडेय ने बताया कि कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के नेतृत्व में फोरेंसिक विज्ञान में अनुसंधान को बढ़ाने के लिए प्रमुख कदम उठाए गए हैं। इसके लिए एम.एससी चौथे सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने लखनऊ फोरेंसिक साइंस प्रयोगशाला (एफएसएल), दिल्ली एफएसएल, भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान (आइआइटीआर) सहित विभिन्न अस्पतालों एवं अनुसंधान संस्थानों में फोरेंसिक इकाइयों के साथ काम करने भेजा गया है। सहायक आचार्य ओशीन, सहायक आचार्य हरि शरण सिंह, डा. ज्योति यादव और राखी राजपूत पूरे शोध प्रक्रिया के दौरान छात्र-छात्राओं का मार्ग दर्शन करेंगे।

इन क्षेत्रों में भी कर रहे लघु शोध : डेट रेप ड्रग्स की पहचान करना, फिंगर प्रिंट पैटर्न के वंशानुगत पहलुओं का अध्ययन, नई कृत्रिम दवाओं की पहचान और विश्लेषण व उनके आपराधिक व्यवहार पर प्रभाव अध्ययन, दूध व तेल की मिलावट का पता लगाना, मोबाइल फोन से पुनः डेटा निकाल कर विश्लेषण के नए तरीकों का अध्ययन, विभिन्न कपड़ों एवं तापमान स्थितियों में वीर्य धब्बों के स्थायित्व की जांच, हैंडराइटिंग विश्लेषण।

संशोधित कार्यक्रम जारी

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने एम.ए अरब कल्चर एंड सिविलाइजेशन सम सेमेस्टर परीक्षाओं का संशोधित परीक्षा कार्यक्रम जारी किया है। दूसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं 27 मई से सात जून और चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं 30 मई से 12 जून तक होंगी। विद्यार्थी विस्तृत कार्यक्रम लवि की वेबसाइट https://www.lkouniv.ac.in/ से डाउनलोड कर सकते है। (जासं)

लवि : वायवा एक को

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने बी.ए/बी.एससी (गणित) का इंटरनल वायवा एग्जाम एक जून को सुबह 10 से शाम पांच बजे तक होगा। गणित एवं खगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. विवेक सहाय की ओर से नोटिफिकेशन के अनुसार जिन विद्यार्थियों ने अभी तक माइनर प्रोजेक्ट की साफ्टकापी गूगल लिंक पर अपलोड नहीं की है उन्हें 24 मई तक मौका दिया गया है। (जासं)

नेट जेआरएफ की तैयारी के लिए कार्यशाला शुरू

लखनऊ : यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले विद्यार्थियों के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने गुरुवार को 'स्नेहाशीष' नाम से सात दिवसीय आनलाइन कार्यशाला शुरू की गई। प्रति कुलपति प्रो. अरविंद अवस्थी ने डिग्री प्राप्त करने और शिक्षित होने के बीच सूक्ष्म अंतर के बारे में बात की। विभागाध्यक्ष डा. अर्चना शुक्ला ने सभी को कार्यशाला के बारे में जानकारी देते हुए छात्रों को प्रोत्साहित किया। विषय विशेषज्ञ डा. अर्चना पांडेय और वक्ता. मेघा सिंह ने तैयारियों से जुड़ी जानकारी साझा की। डा. हंसिका सिंघल ने भी अपने विचार रखे। (जासं)

ड्रग्स की पहचान करना सीख रहे छात्र

प्रशिक्षण

आपराधिक जांच में मोबाइल फोन की अहम भूमिका

फॉरेंसिक के विद्यार्थियों को मोबाइल फोन से डाटा निकालना भी सिखाया जा रहा है। प्रो. केया पांडेय का कहना है कि आपराधिका जांच में मोबाइल फोन की अहम भूमिका होती है। कई बार बड़े से बड़े मामलों को सुलझाने में मोबाइल फोन से प्राप्त किया गया डाटा मजबूत साक्ष्य बन जाता है। इसलिए मौजूदा दौर में फॉरेंसिक के छात्र-छात्राओं को इसकी जानकारी होना भी जरूरी है।

इन पर भी फोकस फिंगरप्रिंट पैटर्न की वंशानुगता, जलाए गए खून का विश्लेषण, दूध और तेल की मिलावट, ऑडियो रिकॉर्डिंग का विश्लेषण, बालों के नमूनों से भारी धातुओं का पता लगाना आदि।

लखनऊ, संवाददाता। एलयू के छात्र-छात्राएं ड्रग्स की पहचान, फिंगर प्रिंट, मिलावट और मोबाइल फोन से डाटा निकालने समेत कई विषयों में प्रशिक्षण ले रहे हैं। उन्हें पढ़ाई के दौरान ही फॉरेंसिक साइंस के व्यवहारिक ज्ञान का मौका मिल रहा है।

एलयू के मानवशास्त्र विभाग में एमए या एमएससी फॉरेंसिक साइंस के छात्र-छात्राएं नशीली ड्रग्स को पहचानना सीख रहे हैं। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय का कहना है कि व्यवहारिक शिक्षा और फॉरेंसिक विज्ञान में रिसर्च को बढ़ावा देने के लिए 30 छात्र-छात्राओं को अलग-अलग संस्थानों में भेजा गया है। कुछ विद्यार्थियों को लखनऊ फोरेंसिक साइंस लैबोरेटरी, दिल्ली एफएसएल में शोध करने के लिए भेजा गया हे। वहीं कुछ को भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान और अलग-अलग अस्पतालों में फॉरेंसिक में व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा गया है। मानवशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. केया पांडेय ने बताया कि फॉरेंसिक विद्यार्थी मुख्य रूप से ड्रग्स की पहचान करना सीख रहे हैं। पार्टी में ड्रग्स इस्तेमाल की घटनाएं सामने आती हैं। इसे पहचानने में धोखा हो जाता है।

PIONEER PAGE 3

विदेशी षड्यंत्रों के नैरेटिव से बाहर निकले भारतीय मीडिया: उमेश उपाध्याय

देवर्षि नारद जयन्ती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

देवर्षि नारद जयन्ती (ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया) के उपलक्ष्य में गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग व विश्व संवाद केन्द्र लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में एपी सेन सभागार में देवर्षि नारद की वेदसम्मत नीतियाँ और वर्तमान भारतीय पत्रकारिता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की प्रस्तावना को आरम्भ करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अवध प्रान्त के प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. अशोक दुबे ने कहा कि देवर्षि नारद जी के संचार के विविध सोपानों के माध्यम से हम जानते हैं। देवर्षि नारद ने हमेशा लोकमंगल की पत्रकारिता की। डॉ. दुबे ने बताया की पत्रकारिता शब्द भारत का नहीं है बल्कि भारत में तो भौतिक समृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिकता अधिष्ठान पर भी बल दिया गया है। हमारे यहाँ सामाजिक कार्यों में कार्य करते हुए विशेष पूजन होता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में देवर्षि नारद हमारी संस्कृति में पूजनीय हैं।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख (पूर्वी उ.प्र. क्षेत्र) सुभाष ने कहा कि पत्रकारिता में सुंदरता और दिव्यता होनी चाहिये। सुंदरता तो लाई जा सकती है लेकिन दिव्यता के लिये सत्यता का अन्वेषण करते हुये उसे पूर्णता देना होगा। देवर्षि नारद ने यही सीख दी है। उन्होंने कहा कि नारदजी के मन में जिज्ञासा थी। वे समाज में हो रहे हर परिवर्तन के बारे में जानने को आतुर रहते थे। यही आतुरता, जिज्ञासा ही उन्हें पत्रकार बनाती है। एक पत्रकार के मन में भी जिज्ञासा का होना बहुत जरूरी है। उसे निरंतर प्रश्न करना आना चाहिये। जो जानना चाहता है वह सब कुछ जान लेता है। इस विधा में देवर्षि नारद सबसे अनुकूल हैं। उन्होंने अपनी बात को विस्तार देते हुए आगे कहा कि वर्तमान में असत्यता को दूर करते हुए सत्यता की स्थापना करना ही पत्रकारिता है। आपातकाल के समय में जब हर किसी का मुँह बंद करने की कोशिश की गयी तो कुछ पत्रकारों ने अपना धर्म निभाते हुए सत्यता को सबके सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने निष्पक्षता के साथ संदेश का संचार किया। जो सत्य था वही लिखा, यही कारण है कि उस काल की कुछ ही खबरें जो सत्यता को उजागर करती हैं, उनकी आज भी चर्चा की जाती है। शेष खबरों का कोई संज्ञान नहीं लेता। आरएसएस के क्षेत्र प्रचार प्रमुख सुभाष ने कहा कि पत्रकारिता में वर्तमान समय में पूर्णता की आवश्यकता है। इस पूर्णता के लिये सत्यता के साथ खोजबीन करते हुए समाचार को प्रस्तुत करने की जरूरत है। इसी से संतुलन आ सकता है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय ने कहा कि आज की पत्रकारिता में द्वंद है। पहले की पत्रकारिता मिशन थी जबकि आज की पत्रकारिता अधर में ही लटकी हुई है। देवर्षि नारद की संचार शैली आज की संचार शैली से अलग है। आज की पत्रकारिता में समन्वय और संतुलन बनाए रखना है। आज लगभग नकारात्मक खबरें ही लीड खबर बनती हैं। दुनिया में भी लीड खबर की मूल अवधारणा में नकारात्मकता है। भारत के मीडिया को इस नैरेटिव से बाहर आने की आवश्यकता है। मानव सभ्यता का विकास विविधता में होता है।

संगोष्ठी के अन्तिम सत्र में लेखक, वरिष्ठ पत्रकार और विश्व संवाद केंद्र के अध्यक्ष नरेंद्र भदौरिया ने कहा कि भारत के दर्शन और संस्कृति को पाश्चात्य देशों द्वारा हमेशा नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हमें अपनी संस्कृति पर संशय नहीं करना है। आज की पत्रकारिता ने सोशल मीडिया के सामने घुटने टेक दिए हैं। भदौरिया ने कहा कि भारत का विज्ञान सबसे उत्तम है। हमें पाश्चात्य मीडिया के सामने नहीं झुकना है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के इस कार्यक्रम का आभार अशोक सिन्हा ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम का संचालन डॉ. सौरभ मालवीय ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अवध के सह प्रचार प्रमुख डॉ. लोकनाथ, डॉ सचिन्द्र, विश्व संवाद केंद्र प्रमुख डॉ. उमेश, भाषा विश्वविद्यालय के उपकुलानुशाक डॉ.मनीष कुमार, वरिष्ठ पत्रकार भारत सिंह, बृजनंदन, डॉ. संतोष, अंजू, विवेक, सुरेश, शशांक आदि सहित विभिन्न संस्थाओं के पत्रकार और विभिन्न संस्थाओं के पत्रकारिता के विद्यार्थी भारी संख्या में उपस्थित रहे।

AMRIT VICHAR PAGE 4

100 छात्रों ने जाना मानव व्यवहार

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से यूजीसी - नेट और जेआरएफ परीक्षा की तैयारी को लेकर निःशुल्क कार्यशाला का आयोजन किया गया। ऑनलाइन कार्यशाला में लखनऊ विवि और उससे संबद्ध महाविद्यालयों के 100 छात्रों को मानव व्यवहार के बारे में जानकारी दीं गई।

कार्यशाला के पहले सत्र की शुरूआत मनोविज्ञान विभाग की विषय विशेषज्ञ डॉ. अर्चना वशिष्ठ ने की। उन्होंने बताया कि कैसे इन परीक्षणों को मानव व्यवहार, अनुभूति और व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को मापने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन

▸▸ लविवि की ओर से छात्रों को कराई जा रही यूजीसी-नेट और जेआरएफ परीक्षा की तैयारियां

किया गया है। उन्होंने परीक्षण के निर्माण और मानकीकरण के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यशाला का दूसरा सत्र भूलना, स्मृति-चरण और प्रक्रियाएं, ध्यान विषय पर केंद्रित रहा। इस सत्र की वक्ता डॉ. मेघा सिंह थीं। उन्होंने उद्दीपक को चुनने और उन चयनित उद्दीपक पर संज्ञानात्मक संसाधनों को केंद्रित करने पर चर्चा की। ऑनलाइन कार्यशाला में डॉ. अर्चना शुक्ला, प्रो. अरविंद अवस्थी सहित अन्य शामिल हुए।

छह और दिनों तक चलेगी कार्यशाला : मनोविज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अर्चना शुक्ला ने बताया कि कार्यशाला छह और दिनों तक आयोजित की जाएगी। हर दिन दो सत्रों का आयोजन होगा। हर सत्र में दो विशेषज्ञ अथवा विवि के पूर्व छात्र शामिल रहेंगे। अभी तक गूगल के माध्यम से 100 छात्र कार्यशाला में सम्मिलित हुए है।

फिल्टर, क्षमता और ध्यान पर केंद्रीकरण

ऑनलाइन जुड़े छात्रों से फिल्टर, क्षमता और ध्यान संबंधी प्रक्रियाओं को लेकर संवाद हुए। उन्हें कोष को प्रबंधित करने की जानकारी दी गई। विषय से संबंधित सभी जिज्ञासाओं का समाधान भी विशेषज्ञों की ओर से किया गया। ऑनलाइन कार्यशाला में शामिल छात्रों की ओर से कई सवाल भी पूछे गए, जिसका उन्हें उत्तर मिला।

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

इल्म तो वह है जो किरदार में झलकता है : प्रो. अरविंद

एलयू में सात दिवसीय स्नेहाशीष कार्यशाला प्रारंभ

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। यूजीसी-नेट,जेआरएफ परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले छात्रों की तैयारी के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग द्वारा स्नेहाशीष नामक सात दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कार्यशाला के उद्घाटन समारोह की शुरुआत डॉ.हंसिका सिंघल ने सभी के स्वागत से की,जिसके बाद सरस्वती वंदना और दीप प्रज्ज्वलन हुआ। इसके बाद यूजीसी नेट परीक्षा के महत्व और उम्मीदवारों के समर्थन में इस कार्यशाला की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। उसके बाद डॉ.हंसिका सिंघल ने गणमान्य व्यक्तियों का परिचय दिया। प्रो.अरविंद अवस्थी (प्रतिकुलपति और डीन कलासंकाय), प्रो.संगीता साहू (डीन छात्र कल्याण), डॉ.अर्चना

शुक्ला, प्रमुख,मनोविज्ञान विभाग और विशेषज्ञ वक्ता जो पूरी कार्यशाला में प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करेंगे। प्रो.अरविंद अवस्थी ने ज्ञान के कुछ शब्दों के साथ छात्रों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि डिग्रियां तो तालीम के खर्चों की रसीदें हैं,इल्म तो वह है जो किरदार में झलकता है। उन्होंने डिग्री प्राप्त करने और शिक्षित होने के बीच सूक्ष्म अंतर के बारे में बताया और प्रतिभागियों को अपना आशीर्वाद भी दिया। इसके अलावा प्रो.संगीता साहू ने भी छात्रों को उनके करियर के लिए आशीर्वाद दिया और परीक्षा में सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने शैक्षणिक प्रयासों में मार्गदर्शन और अच्छे परामर्श के महत्व पर जोर दिया। दोनों अतिथियों ने छात्र कल्याण के लिए ऐसी पहल करने के लिए विभाग को बधाई दी। विभागाध्यक्ष डॉ.अर्चना शुक्ला ने सभी को कार्यशाला के बारे में जानकारी दी और छात्रों को प्रेरणा के कुछ शब्दों के साथ प्रोत्साहित किया। इसके बाद उन्होंने विशेषज्ञ वक्ताओं से प्रतिभागियों को अपना परिचय देने का अनुरोध किया। उन्होंने कार्यशाला के बारे में अपनी राय भी साझा की। डॉ.मेघा सिंह द्वारा अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापन दिया गया और कार्यक्रम की स्मृति में एक औपचारिक समूह तस्वीर भी खींची गई। अंत में इस उद्घाटन समारोह ने एक सप्ताह तक चलने वाले गहन शिक्षण अनुभव के लिए मंच तैयार किया। विशेषज्ञ निर्देश और इंटरैक्टिव सत्रों के मिश्रण के साथ, कार्यक्रम प्रतिभागियों को नेट परीक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास और कौशल के साथ सशक्त बनाने का वादा करता है।

LOKSATYA PAGE 2

देवर्षि नारद का शील ही संदेश है:सुभाष

भारतीय मीडिया को विदेशी षड्यंत्रों के नैरेटिव से आना होगा बाहर : उमेश उपाध्याय

लखनऊ, लोकसत्य। देवर्षि नारद जयन्ती के उपलक्ष्य में लखनऊ विश्वविद्यालय के एपी सेन सभागार में गुरुवार शाम को 'देवर्षि नारद जी की वेदसम्मत नीतियाँ और वर्तमान भारतीय पत्रकारिता' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख (पूर्वी उ.प्र. क्षेत्र) सुभाष जी ने कहा, 'पत्रकारिता में सुंदरता और दिव्यता होनी चाहिये। सुंदरता तो लाई जा सकती है लेकिन दिव्यता के लिये सत्यता का अन्वेषण करते हुये उसे पूर्णता देना होगा। देवर्षि नारद ने अपने यही सीख दी है। देवर्षि नारद का शील ही संदेश है। पौराणिक कथाओं का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने ऋषि वाल्मीकि से चर्चा किया तो रामायण की रचना हो गयी। उन्होंने अपनी वीणा की धुन से संतुलन और

संगोष्ठी

- **पत्रकारिता में सत्यता का अन्वेषण करते हुए ही उसे दिव्यता के साथ पूर्णता दी जा सकती है**

समन्वयता का संदेश दिया है जो वर्तमान परिदृश्य में हो रही पत्रकारिता में स्वीकार करने के लिये अति आवश्यक है। नारदजी का जीवन लोकमंगल के लिये है।' इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में सुभाष ने कहा, 'नारदजी के मन में जिज्ञासा थी। वे समाज में हो रहे हर परिवर्तन के बारे में जानने को आतुर रहते थे। यही आतुरता, यही जिज्ञासा ही उन्हें पत्रकार बनाती है। एक पत्रकार के मन में भी जिज्ञासा का होना बहुत जरूरी है। संगोष्ठी कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया। संगोष्ठी की प्रस्तावना को आरम्भ करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अवध प्रान्त के प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. अशोक दुबे ने कहा कि देवर्षि नारद जी के संचार के विविध सोपानों के माध्यम से हम जानते हैं। देवर्षि नारद ने हमेशा लोकमंगल की पत्रकारिता की। डॉ. दुबे ने बताया की पत्रकारिता शब्द भारत का नहीं है बल्कि भारत में तो भौतिक समृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिकता अधिष्ठान पर भी बल दिया गया है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय ने कहा कि आज की पत्रकारिता में द्वंद है। पहले की पत्रकारिता मिशन थी जबकि आज की पत्रकारिता अधर में ही लटकी हुई है। आज लगभग नकारात्मक खबरें ही लीड खबर बनती है। दुनिया में भी लीड खबर की मूल अवधारणा में नकारात्मकता है। भारत के मीडिया को इस नैरेटिव से बाहर आने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारतीय मीडिया को विदेशी मीडिया की ओर चलाये जाने वाले नैरेटिव से बाहर आना होगा। नकारात्मकता को छोड़नी होगी। संगोष्ठी के अन्तिम सत्र में लेखक, वरिष्ठ पत्रकार और विश्व संवाद केंद्र के अध्यक्ष नरेंद्र भदौरिया ने कहा कि भारत के दर्शन और संस्कृति को पाश्चात्य देशों द्वारा हमेशा नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हमें अपनी संस्कृति पर संशय नहीं करना है। आज की पत्रकारिता ने सोशल मीडिया के सामने घुटने टेक दिए हैं। भदौरिया ने कहा कि भारत का विज्ञान सबसे उत्तम है। हमें पाश्चात्य मीडिया के सामने नहीं झुकना है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के इस कार्यक्रम का आभार अशोक सिन्हा ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम का संचालन डॉ. सौरभ मालवीय ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्र